1st Choice

रूद्रदामा का गिरनार - शिलालेख

कार्दमक वंशीय प्रथम रूद्रदामा नामक शक नरेश का जूनागढ से प्राप्त शिलालेख प्राचीन भारत के अभिलेखों में अत्यंत महत्वपूर्ण अभिलेख है। रूद्रदामा प्रथम का यह लेख शिला के पश्चिम पर ऊपर की तरफ उत्कीर्ण है जिस पर अशोक के चौदह शिलालेख और गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त के दो लेख उत्कीर्ण है यह शिला गुजरात राज्य के जूनागढ शहर से 1 मील पूर्व की ओर गिरनार पर्वत के समीप घाटी मे प्रवेश करने वाले दर्रे के पास विद्यमान है। जूनागढ का नाम रूद्रदामा के लेख में गिरनार दिया गया है। रूद्रदामा का यह लेख विभिन्न ल. वाली 20 पंक्तियों में "11.1 x 5.5" क्षेत्रफल में लिखा हुआ है। इसमें से केवल चार पंक्तियाँ पूर्णतः सुरक्षित है शेष को कुछ क्षति पहुँच चुकी है।

जूनागढ लेख की भाषा संस्कृत है यह पश्चिमोत्तर प्रदेश की कुषाणकालीन ब्राह्मी में लिखा हुआ है। जिसका विकास मौर्योत्तर युग में मथुरा, तक्षशिला, मालवा व सौराष्ट्र मे हुआ था। रूद्रदामा के गिरनार लेख का महत्व निम्न प्रकार है—

रूद्रदामा के गिरनार शिलालेख का महत्व

रूद्रदामा के गिरनार लेख का ऐतिहासिक दृष्टि महत्वपूर्ण स्थान है इस लेख से हमे तत्कालिन समय की राजनैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, कला, साहित्य, सार्वजनिक कार्यों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

1st Choice

गिरनार शिलालेख में रूद्रदामा के शासक बनने व उसके अन्य राजाओं से सबंधो के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जो कि इस प्रकार है----

(1) राजनैतिक महत्व :- रूद्रदामा का गिरनार शिलालेख राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कराता है। यह शिलालेख रूद्रदामा के समय की राजनैतिक स्थिति के साथ मौर्यों के राजनैतिक इतिहास की भी जानकारी उपलब्ध कराता है।

राजा :- इसमें चंद्रगुप्त से लेकर अशोक के काल तक का ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें ~~चन्द्रगुप्त से लेकर अश~~ उल्लेख है कि मौर्य नरेश चंद्रगुप्त के गवर्नर (राष्ट्रीय) पुष्यगुप्त ने गिरनार के समीप जनपद कल्याण के लिए सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था। (321 ई. पू.) मे! चंद्रगुप्त मौर्य के पश्चात मौर्य नरेश अशोक के शासन काल तुषास्क नामक यवनराज ने इस झील से अनेक नहरे निकलवाई थी। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य व अशोक के काल के दो गर्वनरो के नाम मालूम होते है। जूनागढ लेख से ज्ञात होत कि उर्जयत पर्वत से निकलने वाली सुवर्णसिकता व पलाशिनी नदी मे बाढ से सुदर्शन झील का बाँध टूट गया जिसका पुर्ननिर्माण ~~शक~~ रूद्रदामा (15 ने अपने स्वकोष से करवाया। व सुदृ बांध को बँधवा कर उस सुदर्शन झील को और अधिक सुंदर बनवाया (16 वी पंक्ति)

Scanned by CamScanner

(1)

(i) चष्टन वंश का इतिहास -> रुद्रदामा के गिरनार शिलालेख से हमें पश्चिमी भारत के चष्टन वंशीय शक राजाओं के बारे मे विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है शक नरेश सामान्यतः 'क्षत्रप' और महाक्षत्रप' की उपाधि धारण करते थे। इन उपाधियों को धारण करने वाले राजवंश मथुरा, तक्षशिला, महाराष्ट्र व मालवा - सुराष्ट्र में मिलते हैं। (प. भारत के ही एक क्षत्रप वंशो में ही एक वंश कार्दमक वंश था जिसकी स्थापना सामोतिक के पुत्र चष्टन ने की थी रुद्रदामा इसी चष्टन का पौत्र ~~था~~ तथा जयदामा का पुत्र था। चष्टन ने राजा व महाक्षत्रप' की उपाधिया धारण की थी जब कि उसके पुत्र जयदामा ने 'राजा व क्षत्रप' की उपाधियाँ धारण की था।

(ii) प्रथम रुद्रदामा किस प्रकार शासक बना? -> रुद्रदामा किस प्रकार शासक बना इसकी सूचना रुद्रदामा के गिरनार लेख मे मिलती है। इस लेख की नवी पंक्ति में कहा गया है कि

गर्भात्प्रभृत्य - वि (इ) त - समृद्धि [व-रा] जलक्ष्मी धारणा - गुण - तस्सर्व - वर्णैरभिगम्य रक्षणार्थ पतित्वे वृतेन [आ] प्राणोच्छ्वासात्पुरुषवध - निवृत्ति - कृत -

रुद्रदामा गर्भ से ही राजलक्ष्मी धारण करने वाले गुणो से युक्त था। तथा

तथा साथ ही यह दावा भी करता है कि उसे सब वर्णों के लोगो ने अपनी रक्षा के लिए चुना था। यह विदित है कि रुद्रदामा ने यह घोषणा की थी कि उसने अपने आप अर्थात शक्ति से 'महाक्षत्रप' की उपाधि धारण की थी रुद्रदामा एक राजवंश मे उत्पन्न हुआ था उसका पिता जयदामा महाक्षत्रप नही था जब कि रुद्रदामा ने यह उपाधि धारण की थी।

(iii) कुषाणो के साथ संबंध :-

(iv) शक सातवाहन संघर्ष का वर्णन -> अभिलेख की 12 वी पंक्ति मे रूद्रदामा व सातवाहन संघर्ष का वर्णन है।

वीर शब्द जा (तो) त्सेकाविन्धेयनां यौधेयानां प्रसह्योत्सादकेन दक्षिणापथपते स्सातकर्णोर्द्विरपि नीर्व्याजमवजीत्यावजीत्य संबन्धा (वि) दूरतया अनुत्सादनात्प्राप्तयशासा (वाद) (प्राप्त) विजयेन भ्रष्टराज प्रतिष्ठापकेनं यथार्थ-हस्तो-

दक्षिणापथ पति शातकर्णी को शको ने दो बार पराजित किया। क्षहरात वंश के शको ने नहपान के नेतृत्व में सातवाहनों को हराकर प. भारत के अनेक प्रदेशो को अधिकृत कर लिया था। गौतमीपुत्र शातकर्णी ने क्षहरातो का उन्मूलन कर प. भारत मे सातवाहनो की सत्ता को पुर्नस्थापित किया था लेकिन रूद्रदामा के नेतृत्व मे शको ने सातवाहनो को पुनः हरा दिया रूद्रदामा ने आकरवन्ति (आधु. मालवा) अनूप (महिष्मती) सौराष्ट्र (द. काठियावाड़) कुकुरापरांत (उ. कोंकण) सातवाहनो से छीना था वह शातकर्णी को दो बार हराने का दावा भी करता है। रूद्रदामा ने जिस शातकर्णी को दो बार पराजित किया था वह उसका निकट संबंधी था अतः इस अभिलेख से सातवाहनो के काल की भी जानकारी प्राप्त होती है।

विजयें

(v) रूद्रदामा का साम्राज्य विस्तार- जूनागढ शिलालेख की 12 वी पंक्ति से रूद्रदामा के साम्राज्य-विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है---

जनपदानां ------------- सर्वक्षत्राविष्कृत

रूद्रदामा के राज्य मे आकर-अवन्ति (आधु. मालवा) अनुप (महिष्मती) आनर्त (उ. काठियावाड़) सुराष्ट्र (द. काठियावाड़) मरु कच्छ, सिन्धु, सौवीर कुकुर, अपरांत (उ. कोंकण) निषाद (प. विन्ध्य और अरावली) उसके साम्राज्य मे सम्मिलित था तथा उसने इन प्रदेशो को अपने पराक्रम से प्राप्त किया था।

- पूर्वाकर - पूर्वी मालवा जिसकी राज. विदिशा।
- अवन्ति - प. मालवा जिसकी राज. अवन्ती।
- अनूपनीवृत - आधु. माहेश्वर राज्य. महिष्मती।
- आनर्त - उ. काठियावाड़ जिसकी राज. कुशस्थली।
- सुराष्ट्र - दक्षिणी काठियावाड़ जिसकी राज. गिरिनार।
- सिन्धु - निचली सिंधु घाटी का पश्चिमी भाग।
- सौवीर - निचली सिंधु घाटी का पूर्वी भाग।
- अपरान्त - उत्तरी कोकण जिसकी राज. शूरपारक।
- कुकुर - यह सिन्धु और काठियावाड़ के मध्य का प्रदेश था।

(2) प्रशासनिक महत्व -> रूद्रदामा के गिरनार लेख से प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस अभिलेख मे प्रान्तो में मंत्रीपरिषद के संबंध मे तथ्य प्राप्त होते है। तथा मतिसचिव - कर्मसचिव को अमात्य गुणो से युक्त कहे जाने का उल्लेख है। (17 पंक्ति)

(च) महाक्षत्रपस्य मतिसचिव - कर्मसचिवैरमात्य - गुणा - समुद्युक्तैरप्यति - महत्वाद्भेदस्या - विमुख - मतिभिः प्रत्याख्यातारंभ

इस पंक्ति मे रूद्रदामा के द्वारा अपने अमात्य मंत्री कर्मसचिव व मंत्रिपरिषद से बांध के पुर्ननिर्माण के लिए परामर्श का वर्णन है। अभिलेख की 9, 12, 13 वी पंक्ति से शक-

1st Choice

क्षत्रपों की सैन्य व्यवस्था, अस्त्र शस्त्र तथा सैनिक नीतियों की जानकारी प्राप्त होती हैं।
अहरहर्द्धनि-ममन-च्छयार्जितोर्जित-धर्मानुरागेन — — — — —
उसने सैन्य व्यवस्था के अन्तर्गत चतुरंगिणी अर्थात घोड़े, हाथी, रथ एवं पैदल सेना को सम्मिलित किया था। उसने शस्त्रार्थों मे ढाल तलवार प्रमुख थे। तथा सैन्य व्यवस्था का संचालन सेनापति अथवा महादण्डनायक करते थे। अभिलेख की 12 व 13 वी पंक्ति में न्याय व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है उसमें हाथ उठाकर न्याय करने की चर्चा की गई है। अभिलेख की 11 व 12 वी पंक्ति मे प्रान्तीय व्यवस्था की जानकारी भी मिलती है। क्षत्रप प्रशासन को प्रान्तो में विभाजित कर शासन का संचालन करते थे अभिलेख मे उल्लेख आता है कि राष्ट्रीय नामक पदाधिकारी गर्वनर के रूप में राज्य करता था तथा अनार्त व सुराष्ट्र मे उसने सुविशाख गर्वनर को नियुक्त किया था। अभिलेख में स्थानीय व्यवस्था के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है अभिलेख की 10 वी पंक्ति में नगर-निगम व 16 वी पंक्ति मे 'पौर' शब्द का प्रयोग किया गया है यह स्थानीय प्रशासन की समीतियाँ थी। इस प्रकार रुद्रदामा का जूनागढ़ शिलालेख प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

③ आर्थिक महत्व → गिरनार का यह लेख आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

प्रमान - शीलेन स्थूललक्षेण यथावत्प्राप्तैर्बलि शुल्क-भागैः कानक - रजत - वज्र - वैदूर्य - रत्नोपचय - विष्य-न्दमान कोशेन स्फुट - लघु - मधुर - चित्र - कान्त !

★ कर व्यवस्था - अभिलेख की 14 वी पंक्ति में कर व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। इस अभिलेख मे कर के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख है। तथा साथ ही कर के रूप मे बेगार प्राप्त करने का भी निषेध किया गया है। बलि - शुल्क - भाग का उल्लेख भी अभिलेख मे मिलता है बलि वैदिक काल मे प्रजा द्वारा राजा को दी जाने वाली ऐच्छिक भेंट थी इसका उल्लेख अशोक के रुम्मिनदेई स्तम्भ लेख में भी है। जिसका वर्णन उसमें एक धार्मिक कर के रूप मे लिया गया है। कर शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के करों के लिए होता था। विष्टि और प्रणय कर का उल्लेख भी मिलता है। विष्टि एक विशिष्ट-कर था। तथा प्रणय रूपी कर को रुद्रदामा ने एक अनुचित कर माना है प्रणय राजकोष में आधिकाधिक धन संगृहित करने के उपाय के अन्तर्गत कृषकों व्यापारियों पशुपालकों से लिया जाने वाला एक संकटकालीन कर था।

★ सिंचाई व्यवस्था - जूनागढ़ अभिलेख से तात्कालिक सिंचाई व्यवस्था की भी जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेख मे उल्लेख आता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चात अशोक के शासनकाल में यवनराज तुषास्फ ने अनेक नहरे सिंचाई के निकलवाई जिससे कि कृषि व्यवस्था उन्नत हो।

इस अभिलेख की 17 वी पंक्ति से ज्ञात होता है कि रुद्रदामा ने अपने स्वकोष इस झील के बांध का पुनर्निर्माण करवाया था क्यो कि जब उसने अपने कर्मसचिव व मतीसचिव से पूछा तब उन्होने इस कार्य के लिए मना कर दिया

(च) महाक्षत्रपस्य मतिसचिव - कर्मसचिवै रमात्य - गुण - समुद्युक्तैरप्यति - महत्वाद्भेदस्यानुत्साह - विमुख - मतिभिः प्रत्याख्यातारंभं - -

जिससे यह ज्ञात होता है कि रुद्रदामा के समय उसके राज्य की आर्थिक व्यवस्था अच्छी नहीं थी।

(4) सामाजिक महत्व → रुद्रदामा के गिरनार लेख का सामाजिक महत्व भी है। इस अभिलेख से हमें तात्कालिक समाज की जानकारी प्राप्त होती है।

- स्वयंवर प्रथा - यह अभिलेख गुप्त काल तक के अभिलेखों में एक मात्र ऐसा अभिलेख है जिसमें स्वयंवर प्रथा का उल्लेख मिलता है।

क[न्या] - स्वंयवरानेक - माल्य - प्राप्त - दाम्न[T] [15 पंक्ति] (जो राजकुमारियों से स्वयंवर में अनेक जयमालाओं को प्राप्त करने वाले हैं) अतः इससे स्पष्ट है कि इस समय समाज में स्वयंवर प्रथा का प्रचलन था। इस समय तक रुद्रदामा जैसे विदेशी नरेशों का लगभग पूर्ण भारतीयकरण हो चुका था। अतः इस समय तक शक नरेश हिंदू माने जाने लगे तथा वह अन्य क्षत्रियों के साथ स्वयंवरों में आमंत्रित होते थे।

(5) साहित्यिक महत्व :- कला और साहित्य की दृष्टि से भी जूनागढ़ शिलालेख महत्वपूर्ण है। यह संस्कृत भाषा का प्रथम महत्वपूर्ण शिलालेख है। इससे पूर्व के प्रायः सभी लेख प्राकृत और पाली में लिखित है। सातवाहनों शासकों के लेख भी पाली व प्राकृत में ही मिले है। जूनागढ़ लेख के पूर्वकालीन लेखों में केवल अयोध्या से मिला एक लेख संस्कृत भाषा में है परंतु वह प्रशस्ति न होकर दो पंक्तियों का एक लघु लेख मात्र है। प्रथम कुमारगुप्त के काल की मन्दसौर प्रशस्ति, समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति व रुद्रदामा की जूनागढ़ प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि उत्तर भारत के राज-दरबारों में काव्यकला का बराबर विकास हो रहा था। इस दृष्टि से यह अभिलेख संस्कृत साहित्य के विकास के अध्ययन के लिए विशेष महत्वपूर्ण हो जाता है।

इस शिलालेख की भाषा - प्रवाहमय है जिसमें कहीं-2 प्राकृत का प्रभाव भी देखने को मिलता है पंक्ति 12 में प्रयुक्त शब्द 'नित्याजर्मवर्जोत्याव - जीत्य' प्राकृत प्रभाव के कारण ही प्रयुक्त हुआ है। इस अभिलेख में शब्दालंकारों व अर्थालंकारों का प्रयोग तथा अधिक मात्रा में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

1st Choice

(6) व्यक्तिगत महत्व:- जूनागढ़ शिलालेख से रुद्रदामा के व्यक्तित्व के कई पक्षों की जानकारी प्राप्त होती है रुद्रदामा एक जनकल्याणकारी शासक था उसने प्रजा के हित के लिए अपने मंत्रियों के विरोध करने के बावजूद अपने निज निजी कोष से भारी धन व्यय करके सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था। उसने इस कार्य से अपनी प्रजा से कोई अनुचित व अतिरिक्त कर नहीं लिया था। रुद्रदाम के उदार व्यक्तित्व का वर्णन भी इस अभिलेख मे दिया गया है उसने अपने मन्त्रियों को अपनी बात को स्पष्ट रूप मे कहने की छूट दे रखी थी। रुद्रदामा जनता मे भी लोकप्रिय था उसकी इस लोकप्रियता का प्रमाण अभिलेख की 9 वी पंक्ति मे मिलता है - उसमे कहा गया है कि सब जातियों के लोगों ने उसे अपना रक्षक चुना था। रुद्रदामा एक वीर योद्धा था उसने वीर यौधेयों को हराया और शातकर्णी को दो बार पराजित किया। रुद्रदामा शास्त्रों का ज्ञाता, संस्कृत का संरक्षक, काव्यशास्त्र का मर्मज्ञ और गद्य-पद्य रचना में प्रवीण था। उसने न्यायप्रिय शासक के रूप मे ख्याति अर्जित की थी।

~~यथार्थ हस्तोच्छ्रयार्जितोर्जित~~ धर्मानुरागेण।

व्यक्तिगत रूप से वह एक सुंदर एवं राजोचित लक्षणों से युक्त पुरुष प्रतीत होता है।

Scanned by CamScanner